कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



भूमंडलीकृत विश्व का बनना

आधुनिक युग से पहले :-

- 'वैश्वीकरण' की जब हम बात करते हैं तो हम उस आर्थिक व्यवस्था की बात करते हैं जो मोटे तौर पर पिछले लगभग 50 सालों में ही हमारे सामने आई है।
- लेकिन इस अध्याय में हम भूमंडलीकृत विश्व के बनने की प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे।
- जिसमें व्यापार या काम की तलाश में लोगों का, पूँजी का व अन्य बहुत सारी चीजों का एक जगह से दूसरी जगह आने-जाने का एक इतिहास रहा है।
- आज जब हम अपने वैश्विक संपर्कों को देखते हैं तो हमें उस समय के बारे में जानना चाहिए जिससे गुज़रते हुए हमारी यह दुनिया ऐसी बनी है।
- इतिहास के हर दौर में मानव समाज एक-दूसरे के नज़दीक आता गया है।
- प्राचीन काल से ही यात्री, व्यापारी, पुजारी और तीर्थयात्री - ज्ञान, अवसरों, आध्यात्मिक शांति तथा उत्पीड़न (यातनापूर्ण जीवन) से बचने के लिए दूर-दूर की यात्राओं पर जाते रहे हैं।
- अपनी यात्राओं में ये लोग तरह-तरह की चीजें, पैसा, मूल्य-मान्यताएँ, हुनर, विचार, आविष्कार और यहाँ तक कि कीटाणु और बीमारियाँ भी साथ लेकर चलते रहे हैं।
- 3000 ई. पूर्व में समुद्रों से होने वाले व्यापार के माध्यम से सिंधु घाटी सभ्यता उस इलाक़े से भी जुड़ी हुई थी जिसे आज हम पश्चिमी एशिया के नाम से जानते हैं।
- हज़ार साल से भी ज़्यादा समय से मालदीव के समुद्र में पाई जाने वाली कौड़ियाँ (जिन्हें पैसे या मुद्रा के रूप में इस्तेमाल करते थे) चीन और पूर्वी अफ़्रीका तक पहुँचती रही हैं।
- बीमारी फैलाने वाले कीटाणुओं का दूर-दूर तक पहुँचने का इतिहास भी सातवीं सदी से मिलता है। यद्यपि 13वीं सदी के बाद तो इनका प्रसार साफ ही दिखता है।



एक स्मृतिशिला पर पानी के एक जहाज़ का चित्र (गोवा संग्रहालय, दसवीं शताब्दी)

- पश्चिमी तट के क्षेत्र में पाई गई नवीं सदी के बाद की स्मृतिशिलाओं पर जलपोतों की तसवीरों से उस काल में समुद्री व्यापार के महत्त्व का पता चलता है।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

रेशम मार्ग (सिल्क रूट) से जुड़ती दुनिया :-

- प्राचीन काल में इस सिल्क मार्ग के द्वारा दूर-दूर के देश भी व्यापारिक और सांस्कृतिक रूप से जुड़े हुए थे।
- 'चीनी रेशम' के महत्व का इस बात से पता चलता है कि इस मार्ग का नाम ही 'सिल्क मार्ग' पड़ गया। जो चीन से पश्चिमी देशों को जाता था।
- ये सिल्क मार्ग बहुत सारे थे।
- ज़मीन या समुद्र से होकर गुज़रने वाले ये मार्ग ना केवल एशिया के क्षेत्रों को ही एक-दूसरे से जोड़ते थे बल्कि एशिया को यूरोप तथा उत्तरी अफ्रीका से भी जोड़ते थे।
- ये मार्ग ईसा पूर्व के समय में ही प्रारंभ होकर लगभग 15वीं शताब्दी तक अस्तित्व में थे।
- इसी रास्ते से चीनी पॉटरी जाती थी।
- इसी रास्ते से भारत व दक्षिण-पूर्व एशिया के कपड़े व मसाले दुनिया के दूसरे भागों में पहुंचते थे।
- वापसी में सोने-चादी जैसी कीमती धातुएँ यूरोप से एशिया पहुँचती थीं।
- व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान, दोनों प्रक्रियाएँ साथ-साथ चलती थीं।
- शुरुआती काल के ईसाई-मिशनरी निश्चय ही इसी मार्ग से एशिया में आते होंगे।
- कुछ सदी बाद मुस्लिम धर्मोपदेशक भी इसी रास्ते से दुनिया में फैले।
- इन सबसे बहुत पहले पूर्वी भारत में उपजा बौद्ध धर्म भी इसी सिल्क मार्ग की विविध शाखाओं से ही कई दिशाओं में फैल चुका था।

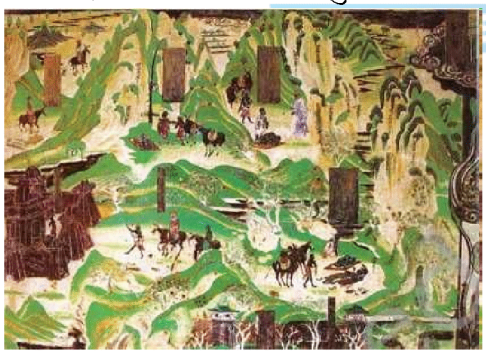

चीन की एक गुफा पेंटिंग में दर्शाया गया सिल्क मार्ग, (8वीं सदी), गुफा 217, मोगाओ ग्रोटोज़, गन्सू, चीन।

भोजन की यात्रा : स्पैघेत्ती और आलू

- हमारे खाद्य पदार्थ दूर देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कई उदाहरण पेश करते हैं।
- जब भी व्यापारी और मुसाफिर किसी नए देश में जाते थे तो जाने-अनजाने वहाँ नयी फ़सलों के बीज बो आते थे।
- संभव है कि दुनिया के विभिन्न भागों में मिलने वाले 'झटपट तैयार होने वाले' खाद्य पदार्थों के भी साझा स्रोत रहे हों।
- इसका उदाहरण स्पैघेत्ती (पास्ता) और नूडल्स ही हैं।
- माना जाता है कि नूडल्स चीन से पश्चिम में पहुँचे और वहाँ उन्हीं से पास्ता का जन्म हुआ हो।
- यह भी संभव हो सकता है कि पास्ता अरब यात्रियों के साथ 5वीं सदी में इटली के टापू सिसली पहुंचा हो।
- इसी तरह के आहार भारत और जापान में भी पाए जाते हैं इसलिए हो सकता कि हम कभी यह न जान सकें कि उनका जन्म कैसे हुआ होगा।
- फिर भी, इन अनुमानों के आधार पर इतना ज़रूर कहा जा सकता है कि आधुनिक काल से पहले भी दूर देशों के बीच सांस्कृतिक लेन-देन चल रहा होगा।

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



वेनिश एवं पूर्वी विश्व से आए व्यापारी चीजों की अदला बदली करते हुए। (मार्को पोलो, बुक ऑफ मार्बल्स, 15वीं सदी)

- आलू, सोया, मूँगफली, मक्का, टमाटर, मिर्च, शकरकंद जैसे बहुत सारे दूसरे खाद्य पदार्थ लगभग 500 साल पहले हमारे पूर्वजों के पास नहीं थे।
- ये खाद्य पदार्थ यूरोप और एशिया में तब आये जब क्रिस्टोफर कोलंबस गलती से अमेरिका पहुंच गया। (यहां अमेरिका से मतलब उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका तथा कैरेबियन द्वीप समूह सभी से है)
- दरअसल हमारे बहुत सारे खाद्य पदार्थ अमेरिका के मूल निवासियों (अमेरिकन इंडियनों) से हमारे पास आए हैं।

आलू :-

- कई बार नयी फसलों के आने से जीवन में ज़मीन-आसमान का फर्क आ जाता था।
- साधारण से आलू का इस्तेमाल शुरू करने पर यूरोप के गरीबों की ज़िंदगी आमूल रूप से बदल गई थी।
- उनका भोजन बेहतर हो गया और उनकी औसत उम्र बढ़ने लगी।
- आयरलैंड के गरीब काश्तकार तो आलू पर इस हद तक निर्भर हो चुके थे कि 1840 के दशक के मध्य में किसी बीमारी के कारण आलू की फसल खराब हो जाने से लाखों लोग भुखमरी से मर गए।

आयरलैंड में आलू अकाल, इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज़, 1849



- फसल कट जाने के बाद बचे-खुचे आलुओं की उम्मीद में खेत की मिट्टी खोदते बच्चे।
- 1845 से 1849 के बीच पड़े भयानक आयरिश आलू अकाल के दौरान लगभग 10 लाख लोग भुखमरी के कारण मारे गए थे
- और इससे दोगुने लोग काम की तलाश में घर-बार छोड़ कर दूसरे इलाक़ों में चले गए थे।

Download Mission Hyan App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here